रूहानी ज़िक्रो फ़िक्रे अज़माले रमज़ान

सलामे मोहम्मदी ﷺ

चहेल मीम ग़ैर मन्कूत 19

मुरत्तिब

मोहम्मद अज़ीज़ सुल्तान नाचीज़

نیت روزہ:

نَوَیْتُ اَنْ اَصُوْمَ لِلّٰہِ تَعَالٰی
مِنْ فَرْضِ رَمَضَانَ ھٰذَا○

دعائے افطار:

اَللّٰھُمَّ لَکَ صُمْتُ وَبِکَ اٰمَنْتُ وَعَلَیْکَ تَوَکَّلْتُ
وَعَلٰی تَوَکَّلْتُ وَعَلٰی رِزْقِکَ اَفْطَرْتُ○

تراویح کی دعا

سُبْحَانَ ذِی الْمُلْکِ وَالْمَلَکُوْتِ سُبْحَانَ ذِی الْعِزَّۃِ
وَالْعَظَمَۃِ وَالْھَیْبَۃِ وَالْقُدْرَۃِ وَالْکِبْرِیَآءِ وَالْجَبَرُوْتِ
سُبْحَانَ الْمَلِکِ الْحَیِّ الَّذِیْ لَایَنَامُ وَ لَا یَمُوْتُ
سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَبُّنَا وَرَبُّ الْمَلٰئِکَۃِ وَالرُّوْحِ
اَللّٰھُمَّ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ یَامُجِیْرُ یَامُجِیْرُ یَامُجِیْرُ○

اوقات سحر و افطار

رمضان المبارک ۱۴۳۸ھ بمطابق مئی/جون ۲۰۱۷ء برائے الہ آباد

ایام مبارکہ	رمضان المبارک ۱۴۳۸ھ	مئی 2017	ختم سحری		وقت افطار	
			گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ
اتوار	1	28	3	35	6	52
پیر	2	29	3	34	6	52
منگل	3	30	3	34	6	53
بدھ	4	31	3	33	6	53
جمعرات	5	1 جون	3	33	6	54
جمعہ	6	2	3	33	6	55
سنیچر	7	3	3	33	6	55
اتوار	8	4	3	33	6	56
پیر	9	5	3	32	6	56
منگل	10	6	3	32	6	56
بدھ	11	7	3	32	6	57
جمعرات	12	8	3	32	6	57
جمعہ	13	9	3	31	6	57
سنیچر	14	10	3	31	6	58
اتوار	15	11	3	31	6	58

ایام مبارکہ	رمضان المبارک ۱۴۳۸ھ	جون 2017	ختم سحری		وقت افطار	
			گھنٹہ	منٹ	گھنٹہ	منٹ
پیر	16	12	3	31	6	59
منگل	17	13	3	31	6	59
بدھ	18	14	3	31	7	00
جمعرات	19	15	3	31	7	00
جمعہ	20	16	3	31	7	00
سنیچر	21	17	3	31	7	01
اتوار	22	18	3	31	7	01
پیر	23	19	3	31	7	01
منگل	24	20	3	31	7	01
بدھ	25	21	3	32	7	01
جمعرات	26	22	3	32	7	02
جمعہ	27	23	3	32	7	02
سنیچر	28	24	3	33	7	02
اتوار	29	25	3	33	7	02
پیر	30	26	3	33	7	03

۷۸۶ ۹۲

रूहानी ज़िक्रो फ़िक्र अअ़माले रमज़ान

सलामे मोहम्मदी ﷺ

चहेल मीम ग़ैर मन्क़ूत

19

۷۸۶/۹۲

نقش تحفۂ روحانی وحل المشکلات

مَعَ اسْمِ اللهِ الْمَلِكِ السَّلَامِ

ص م ح م د ﷺ

ص ح م د م ﷺ

ص م د م ح ﷺ

ص د م ح م ﷺ

اس نقش کو دیکھنے والے کی ہر مشکل حل ہوگی انشاء اللہ

मुरत्तिब

बमौक़ा रमज़ान 1438हि0

बफ़ैज़े रूहानी सय्यिदुना मोहयुद्दीन व सय्यिदुना मोईनुद्दीन व हज़रात मख़्दूमीन सादात चौदहों पीराँ رضی اللہ عنہم

मोहम्मद अज़ीज़ सुल्तान नाचीज़

फ़हरिस्त

न०	मज़मून	स०
1	सलामेमोहम्मदी ﷺ चहेल मीम ग़ैरमन्कूत़ (१६)	4
2	फ़ज़ीलते सलामेमोहम्मदी ﷺ चहेल मीम ग़ैर मन्कूत़(१६)	9
3	रूहानी ज़िक्रो फ़िक्रे अश्माले रमज़ान	10
4	रोज़ा रखने वालों के चार दरजात हैं	16
5	आदाबे माहे रमज़ान और रूहानी तअ़लीम	19
6	सूफ़िया से मन्कूल नवाफ़िलो अज़्कार	25
7	फ़ज़ाएले आयतुल कुर्सी अहादीस की रौशनी में	26
8	हुज़ूर सय्यिदी मोहयुद्दीन रदियल्लाहु अन्हु की रूहानी तअ़लीमात	29
9	त़रीक़ा रूहानी ज़िक्रो फ़िक्रे आयतुल कुर्सी	34

۷۸۶/۹۲

نقش تحفۂ روحانی وحل المشکلات

مَعَ اسْمِ اللهِ الْمَلِكِ السَّلٰمِ

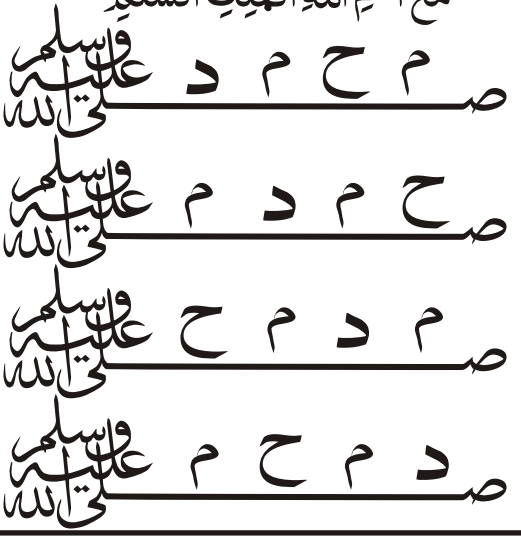

اس نقش کو دیکھنے والے کی ہر مشکل حل ہوگی انشاءاللہ

सलामे मोहम्मदी ﷺ
चहेल मीम ग़ैरमन्कूत़ (19)

मअ़स्मिल्लाहिल मालिकिस्सलामि अल्लाहुम्म
ल कल ह़म्दु ला इलाह इल्लल्लाहु स़ल्लि
कामिलवँ व सल्लिम सलामन दाइमवँ व कर्रिम
क र मन सर्मदन अ़ला मौलाई रहूमि आ़लमि
क व मौला कुल्लिस़्साइमि व मा ऊह़ि य
कलामु क इला हु व व मुअ़त़ी आलाइ कुल्लि
आ़लमि क व मुमिद्दि कुल्लिल मलाइकि व
मुस्लिकि सिरात़ि क व हु व रसूलु क व सिर्रु
क मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाहि वस़ा र वालिदुहू अ़त्हरल
वालिदि वउम्मुहू अ़त्हरल उम्मि वआलुहू

अ़्हरल आलि वअ़ला वालिदिही व उम्मिही व आलिही वल मौला अ़लिय्यिवँ व वलदै अ़लिय्यिवँ व उम्मिहिमा व मुह़यिल इस्लामि व आलिही व वालिल इस्लामि व आलिही व अह़ म द व लिय्यिल्लाहि व ह़वारिय्यि वलिय्यिल्लाहि व आलिही वकुल्लिउममि रसूलिल्लाहि कुल्लल ह़ालि।

मुराद अल्लाह के इस्म के सहारे कि वही मालिक व सलामी वाला है। ऐ हमारे अल्लाह सारी ह़म्द अल्लाह ही के लिए है वाह़िद अल्लाह ही इलाह है कामिल दुरुद दाइमी सलाम और सर्मदी करम हमारे मौला अल्लाह के सारे आ़लम की कमाले मेहर वाले के लिए वारिद हो और सारे सौ़म वालों के मौला के लिए हो और उस रसूल के लिए हो कि उसके लिए इलाही

कलाम वह़ी किए गए और अल्लाह के सारे आ़लम की अ़ता़ओं के मोअ़त़ी के लिए हो और सारे मलाइका के मददगार के लिए हो और अल्लाह की राह के हादी के लिए हो और वह अल्लाह के रसूल और सिर्र मोह़म्मद ﷺ अल्लाह का रसूल है और उस रसूल के वालिद कमाले तुहर वाले हुए सारे वालिद से और माँ सारी माओं से और आलो औलाद सारी आलो औलाद से और (दुरूदो सलाम) उस रसूल के वालिद के लिए हो और माँ के लिए हो और आल के लिए हो, मौला अ़ली के लिए हो, मौला अ़ली के लाडलों के लिए हो और मौला अ़ली के लाडलों की वालिदह के लिए हो, इस्लाम के मुह़यी के लिए हो और आल के लिए हो, इस्लाम के मददगार के लिए हो और आल के लिए हो और अह़मद वलीयुल्लाह के लिए हो और वलीयुल्लाह के हम दमों के लिए हो और आल के लिए हो, अल्लाह के रसूल की सारी उमम के लिए हो हर दम ।

तौज़ीह़ी तर्जमाः- अल्लाह के इस्म के साथ जो मालिक है सलामती देने वाला है ऐ हमारे अल्लाह तमाम तअ़रीफ़ तेरे ही लिए है अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं तू ख़ूब ख़ूब कामिल दुरुद दाइमी सलाम और सर्मदी करम नाज़िल फ़रमा हमारे मौला अपने सारे जहान के मेहरबान पर और तमाम रोज़ादारों के आक़ा पर और उस ज़ात पर कि जिन की त़रफ़ तेरा पाक कलाम वह़ी किया गया और तेरे सारे जहान की नेअ़मतों के अ़त़ा करने वाले पर और सारे फ़िरिश्तों के मददगार पर और तेरे रास्ते पर चलाने वाले पर और वह तेरे रसूल और तेरा राज़ मोह़म्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं कि जिनके वालिद (सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह रदि़यल्लाहु अ़न्हु)तमाम वालिद में सब से ज़्यादा पाकीज़गी वाले हैं और जिनकी माँ (बी बी आमिना रदि़यल्लाहु अ़न्हा) तमाम माओं में सबसे ज़्यादा पाकीज़गी वाली हैं और

जिनकी आलो औलाद तमाम आलो औलाद में सबसे ज़्यादा पाकीज़गी वाले हैं और (दुरूदोसलाम नाज़िल हो)आप ﷺ के वालिद पर और आप ﷺ की वालिदह पर और आल पर, ह़ज़रत मौला अ़ली रदि़यल्लाहु अ़न्हु पर और मौला अ़ली के दोनों लाडलों इमामे ह़सन व इमामे हुसैन अ़लैहिमस्सलाम पर और ह़स्नैन करीमैन की वालिदह ख़ातूने जन्नत सय्यिदह बीबी फ़ात़ेमा ज़हरा रदि़यल्लाहु अ़न्हा पर और दीन के ज़िन्दा करने वाले मुह़युद्दीन सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रदि़यल्लाहुअ़न्हु पर आप की आल पर और दीन के मददगार ख़्वाजा मोई़नुद्दीन ह़सन सन्जरी पर आप की आल पर और ह़ज़रत मख़्दूम सय्यिद अह़मद वलीयुल्लाह पर आप के अस़्ह़ाबे रूह़ानी पर और आल पर, और अल्लाह के रसूल के सारे उम्मतियों पर हर दम ।

फ़ज़ीलते सलामे मोहम्मदी ﷺ चहेल मीम ग़ैर मन्कूत़ (19)

यह "सलामे मोहम्मदी ﷺ चहेल मीम" जो कि 40 मीम के साथ बेग़ैर नुक़्ते वाले हुरूफ़ पर मुश्तमिल है इस का तर्जमा भी ग़ैर मन्कूत़ है जिस को समझने के लिए तौज़ीही तर्जमा शामिल है जो शख़्स इस दुरूद को रोज़ाना 100/11/5 बार पढ़ने का अपना मअ़मूल बनाएगा उसे अल्लाहो रसूल की ख़ुश्नूदी ह़ासिल होगी इ़बादत में ज़ौक़ो शौक़ और ग़ौरो फ़िक्र की तौफ़ीक़ अ़ता होगी ग़ैर रोज़ादार को रोज़ा रखने की तौफ़ीक़ अ़ता होगी और रोज़ादारों के रोज़ों को शर्फ़े क़बूलियत मिलेगा अगर सेह़री व इफ़्तार के वक़्त पढ़े तो बे शुमार नेअ़मतों का ह़क़दार होगा उसे माहे रमज़ान के आदाब और जुम्ला फ़ुयूज़ो बरकात से नवाज़ा जाएगा और हर महीने में मुत्तक़ियों के अ़मल की तौफ़ीक़ और ख़ैरे

कसीर की दौलत ह़ासिल होगी वह जुम्ला बलीयात व आफ़ात और तमाम शरों से महफ़ूज़ हो जाएगा नीज़ उसे अहले बैत व स़ह़ाबए केराम की शफ़्क़तो मोह़ब्बत ह़ासिल होगी और उनका दीदार नसीब होगा ईमान पर ख़ातेमा होगा । इन्शाअल्लाहु तआ़ला।

रूह़ानी ज़िक्रो फ़िक्रे अ़माले रमज़ान

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम।

अल्ह़मदुलिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन वस़्सलातु वस्सलामु अ़ला सय्यिदिस़्साइमीन सय्यिदिना मुह़म्मदिवँ व आलिही व अस़्ह़ाबिही अज्मईन।

अरकाने इस्लाम में रोज़ा तीसरा बुन्यादी रुक्न है जिस की पाबन्दी शहादते तौह़ीद व रिसालत और नमाज़ के बाद फ़र्ज़ का दरजा रखती है कुरआने ह़कीम में

अल्लाह रब्बुलइ़ज़्ज़त रोज़े की फ़रज़ीयत के बाब में तमाम अहले ईमान से इरशाद फ़रमाता है "या अय्युहल्लज़ी न आमनू कुति ब अ़लैकुमुस़्सियामु कमा कुति ब अ़लल्लज़ी न मिन क़ब्लिकुम लअ़ल्लकुम तत्तकून"(ऐ ईमान वालों तुम पर उसी त़रह़ रोज़े फ़र्ज़ किए गए हैं जैसे तुमसे पहले लोगों पर फ़र्ज़ किए गए थें ताकि तुम परहेज़गार बनजाओ)इस आयते करीमा में दो बातें स़राह़त के साथ ब्यान की गई हैं एक यह कि रोज़े सिर्फ़ उम्मते मोह़म्मदीया ﷺ पर ही नहीं बल्कि उममि साबिक़ा पर भी फ़र्ज़ किए गए, दोसरा रोज़े का मक़्स़द ब्यान किया गया हैं कि तुम परहेज़गार बनजाओ।

सिक़ह रिवायत के मुत़ाबिक़ रोज़े की फ़र्ज़ीयत का हुक्म दोसरी स़दी हिजरी में तह़वीले कअ़बा के वाक़िआ़ से दस रोज़ बाद माहे शअ़बान में नाज़िल हुवा आयते रोजा शअ़बान के महीना में नाज़िल हुई जिस में

रमज़ानुल मुबारक को माहे सियाम क़रार देते हुए बारी तआ़ला ने अहले ईमान से इरशाद फ़रमाया "फ़ मन शहि द मिन्कुमुश्शह र फ़ल्यसुम्हु"(पस तुम में से जो कोई इस महीना को पाले तो वह इस के रोज़े ज़रूर रखे) इस आयते मुबारका में रोज़ा रखने का हुक्म हर उस साहिबे ईमान को दिया गया है जो अपनी ज़िन्दगी में इस माहे मुक़द्दस को पाले।

इसलामी नवाँ महीना रमज़ानुल्मुबारक है इस की वज्हे तस्मिया यह है कि रमज़ान रम्ज़ से माख़ूज़ है और रम्ज़ का मअ़ना जलाना है चूँकि यह महीना भी मुसलमानों के गुनाहों को जला देता है इस लिए इस का नाम रमज़ान रखा गया है बअ़ज़ का क़ौल है कि यह रम्ज़ से मुश्तक़ है जिस का मअ़ना है गरम ज़मीन से पाँव जलना क्योंकि माहे सियाम भी नफ़्स के जलने और तकलीफ़ का मौजब होता है लिहाज़ा इस का नाम रमज़ान रखा गया है।

हुज़ूर ग़ौसुल्अअ़ज़म रदि़यल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रमज़ान में पाँच ह़रफ़ हैं 'रा' यह रिज़वाने खुदा से एबारत है,'मीम'से मुह़ाबाते खुदा,'ज़्वाद'से ज़माने ख़ुदा,'अलिफ़' से उल्फ़ते ख़ुदा और 'नून'से नूरे ख़ुदा मुराद है, पस रमज़ानुल मुबारक मुसलमानों के लिए रिज़ाए ख़ुदा और मुह़ाबाते ख़ुदा, ज़माने ख़ुदा, उल्फ़ते खुदा और नूरे खुदा का सबब होता है।(गुन्यतुत़्त़ालिबीन)

ह़ज़रते अबू हुरैरह रदि़यल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि हुज़ूर अक़्दस ﷺ ने फ़रमाया जब रमज़ान आता है तो रह़मत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और जहन्म के दरवाज़े बन्द कर दिए जाते हैं और शयात़ीन ज़न्जीरों में जकड़ दिए जाते हैं (बुख़ारी व मुस्लिम)

ह़ज़रते सलमान फ़ारसी रदि़यल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने शअ़बान के आख़िरे दिन में वअ़ज़ फ़रमाया तो आपने फ़रमाया ऐ लोगो तुम्हारे पास अ़ज़मत वाला बरकत वाला महीना आया, वह महीना

जिस में एक रात हज़ार महीनों से बेहतर है इस के रोज़े अल्लाह तआ़ला ने फ़र्ज़ किए और इस की रात में क़ेयाम (नमाज़ पढ़ना), तत़व्वुअ़(यअ़नी सुन्नत) और जो भी इसमें नेकी का कोई काम करे तो ऐसा है जैसे दोसरे किसी महीने में फ़र्ज़ अदा किया और इसमें जिसने फ़र्ज़ अदा किया तो ऐसा है जैसे और दिनों में सत्तर फ़र्ज़ अदा किए यह महीना स़ब्र का है और स़ब्र का सवाब जन्नत है और यह महीना मुवासात (ग़मख्वारी और भलाई) का है और इस महीने में मोमिन का रिज़्क़ बढ़ाया जाता है जो इसमें रोज़ादार को इफ़्त़ार कराए उसके गुनाहों के लिऐ मग़फ़िरत है और उसकी गरदन आग से आज़ाद कर दी जाएगी और उस इफ़्त़ार कराने वाले को वैसा ही सवाब मिलेगा जैसा रोज़ा रखने वाले को मिलेगा बेग़ैर इस के कि उस के अज्र में से कुछ कम हो, हमने अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह ﷺ हममें का हर शख़्स वह चीज़ नहीं पाता जिस से रोज़ा इफ़्त़ार कराए हुज़ूर

ﷺ ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला यह सवाब उस शख़्स को भी देगा जो एक घूँट दूध या एक खुरमा या एक घूँट पानी से रोज़ा इफ़्तार कराए और जिसने रोज़ादार को भर पेट खाना खिलाया उस को अल्लाह तआ़ला मेरे ह़ौज़ से पिलाएगा कि कभी प्यासा न होगा यहाँ तक कि जन्नत मे दाख़िल हो जाए यह वह महीना है कि इस का अव्वल अ़श्रा रह़मत है और इस का औसत़ अ़श्रा मग़फ़िरत है और इसका आख़िर अ़श्रा जहन्नम से आज़ादी है जो अपने गुलाम पर इस महीने में आसानी करेगा अल्लाह तआ़ला उसे बख़्शदेगा और जहन्नम से आज़ाद फ़रमा देगा (श़अ़बुलईमान)

ह़ज़रते सहल बिन सअ़द रदि़यल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया जन्नत में आठ दरवाज़े हैं उनमें एक दरवाज़ा का नाम रय्यान है उस दरवाज़ा से वही जाएंगे जो रोज़े रखते हैं (बुख़ारी व मुस्लिम)

ह़ज़रते अबू हुरैरह रदि़यल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि हुज़ूर नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया इब्ने आदम का नेक अ़मल

दस गुना से लेकर सात सौ गुना तक बढ़ाया जाता है अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि रोज़ा इस से मुस्तस्ना है क्योंकि वह मेरे लिए है और मैं ही उस की जज़ा दूँगा (सुनने इब्ने माजा)

नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया रोज़ादार के लिए दो खुशियाँ हैं एक इफ़्तार के वक़्त और दोसरी खुशी अपने रब से मुलाक़ात के वक़्त (मिशकात शरीफ़)

रोज़ा रखने वालों के चार दरजात हैं

(1) अ़वाम का रोज़ाः यह वह लोग हैं जो महज़ रस्मन रोज़ा रखते हैं और उनका रोज़ा सेहरी व इफ़्तारी तक महदूद होता है वह लोग रोज़ा रख कर भी अहकामे खुदावन्दी की सरीहन ख़िलाफ़ वरज़ी करते हैं झूट, ग़ीबत, धोका, फ़रेब देही और दिगर अफ़आ़ले क़बीहा के इरतेकाब को अपना मअ़मूल बनाए रखते हैं, ऐसे लोग

रोज़े के फ़ुयूज़ो बरकात से महरूम रहते हैं उन की नमाज़ और उनके रोज़े बे रूह होते है ।

(2) ख़ास्सुल आम का रोज़ाः यह उन लोगों का रोज़ा है जो अहकामे खुदावन्दी की पास दारी करते हैं और हत्तलवसअ कबीरह सग़ीरह गुनाहों से अपना दामन बचाए रखते हैं वह हर मुआमले में हरामो हलाल की तमीज़ को अपना शेआर बना लेते हैं चुनान्चे उन के रोज़े से उन की सिरतो किरदार में तक़वा का जौहर पैदा होजाता है और उन की ज़िन्दगियाँ लअल्लकुम तत्तकून की अमली तफ़सीर बनजाती हैं।

(3) ख़ास्सुल ख़ास का रोज़ा :यह वह लोग हैं जिनकी ज़िन्दगियाँ ना सिर्फ़ तक़वा के रंग में रंगी होती हैं बल्कि वह इस पर मुस्तज़ाद नफ़्स की सारी ख़्वाहिशों को पामाल करदेते हैं यह उरफ़ाए कामिलीन और औलियाए एज़ाम का रोज़ा है कुरआने मजीद में ऐसे लोगों के इस मक़ाम की तरफ़ इन अलफ़ाज़ में इशारा

किया है "व नहन्नफ़्स अ़निल हवा फ़इन्नलजन्न त हियल मअवा" (और जिसने अपने नफ़्स को हर बुरी ख़्वाहिश से रोका होगा तो यक़ीनन जन्नत ही उस का ठिकाना होगा।

(4) अख़स्सुल ख़ास़ का रोज़ाः यह रोज़े की आख़िरी मन्ज़िल है जो उन लोगों को नसीब होती है जिन्हें मक़ामे मुशाहदा पर मुतमक्किन किया गया है, मक़ामे मुशाहदा पर अल्लाह का ख़ास़ बन्दा सिवाए ज़ाते ख़ुदावन्दी के हर शै को भूल जाता है और उस की त़लब व आरज़ू का मह़वर अल्लाह की रिज़ा के हुसूल के ए़लावा और कुछ नहीं रहता , अल्लाह हमें रोज़ों के अअ़ला मरातिब के फ़ैज़ान से मुशर्रफ़ फ़रमाए आमीन।

नोटः- आस्तान-ए-ह़ज़रात मख़्दूमीन सादात चौदहों पीराँ رضی اللہ عنہم से मुतअ़ल्लिक़ जुम्ला मत़बूआ़त मस्लन "दुरूदे रूह़ानी व दोआ़-ए-क़ल्बी, दुरूदे मोह़म्मदी, सलामे मोह़म्मदी मअ़ अस्रारे "मीम ह़ा मीम दाल" और दुरूदे चहल मीम" वग़ैरह **www.syed14peer.com** पर मुलाह़ज़ा कर सकते हैं।

आदाबे माहे रमज़ान और रूहानी तअ़लीम

ताख़ीर से सेहरी खाए, मग़रिब की नमाज़ से पहले खुजूर या पानी से इफ़्तार करे और ख़ूब स़दक़ा व ख़ैरात करे लोगों के लिए सेहरी व इफ़्तारी का इन्तेज़ाम करे और ग़रीब व नादार लोगों की इम्दाद करे कुरआने पाक की तिलावत करे और दुरूद शरीफ़ को अपना मअ़मूल बनाए मस्जिद में एअ़तिकाफ़ करे ख़ास़ त़ौर पर रमज़ान शरीफ़ के आख़िरी अ़श्रे में कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मुअ़तकिफ़ के बारे में फ़रमाया मुअ़तकिफ़ गुनाहों से बाज़ रहता है और नेकियों से उसे इस क़दर सवाब मिलता है जैसे उसने तमाम नेकियाँ कीं नीज़ मरवी है कि जिस ने रमज़ान में दस दिनों का एअ़तिकाफ़ किया तो वह ऐसा है जैसे उसने दो ह़ज किए।

मस्जिद में अल्लाह तआ़ला की रेज़ा के लिए नियत के साथ ठहरना एअ़तिकाफ़ है और इस के लिए मुसलमान, आ़क़िल और जनाबत व ह़ैज़ व निफ़ास से पाक होना शर्त है , हर मस्जिद में एअ़तिकाफ़ स़ह़ीह़ है औरत को मस्जिद में एअ़तिकाफ़ मकरूह है बल्कि वह घर में ही एअ़तिकाफ़ करे मगर उस जगह करे जो उस ने नमाज़ पढ़ने के लिए मुक़र्रर कर रखा है, बेहतर है कि उस जगह को चबूतरा वग़ैरह की त़रह़ बुलन्द करे, नमाज़े पन्जगाना जमाअ़त के साथ अदा करे और नमाज़े तरावीह़ का एहतिमाम करे औरतें अपने घरों में नमाज़े तरावीह़ अदा करें अपनी निगाहें नीची रखें और मक्रूह चीज़ों की त़रफ़ तवज्जुह न करें उन चीज़ों को भी देखने से गुरेज़ करे जिन से तवज्जुह बटती है और अल्लाह तआ़ला की याद से ग़फ़लत पैदा होती है, अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया निगाह इब्लीस के तीरों में से एक तीर है जो शख़्स अल्लाह के डरसे अपनी

निगाह को बदनज़री से महफ़ूज़ रखेगा अल्लाह तआ़ला उसे ऐसा ईमान अ़ता करेगा जिस की ह़लावत वह अपने दिल में महसूस करेगा।

ह़ज़रत जाबिर रदि़यल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि हुज़ूर अक़्दस ﷺ ने फ़रमाया पाँच चीज़ें रोज़ादार का रोज़ा तोड़ देती हैं झूट, ग़ीबत, चुगुल ख़ोरी, झूटी क़सम और शहवत से देखना ।

हूज़ूर अक़्दस ﷺ ने फ़रमाया रोज़ा एक ढ़ाल है अगर तुम में से कोई शख़्स रोज़े से हो तो बदकलामी न करे और न जहालत से पेश आए अगर कोई शख़्स उस से लड़ने लगे या गाली गलोच करे तो उस से यह कह देना चाहिए मैं रोज़े से हूँ मैं रोज़े से हूँ और अपने कानों को बुरी बात सुनने में मशग़ूल न करे क्यों कि जिस बात का कहना ह़राम है उस बात का सुनना भी ह़राम है, अपने हाथों और पाँव को और दोसरे अअ़ज़ा को गुनाहों से बाज़ रखा जाए हुज़ूर अक़्दस ﷺ ने फ़रमाया

बहुत से रोज़ा दार ऐसे हैं जिन के रोज़े का ह़ासिल भूक और प्यास के ए़लावा कुछ नहीं है, इफ़्तार के लिए ह़लाल रिज़्क़ का इहतिमाम करे, इफ़्तार के वक़्त ह़लाल रिज़्क़ भी इतना न खाए कि पेट फूल जाए अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक कोई ज़र्फ़ इतना बुरा नहीं है जितना बुरा वह पेट है जो ह़लाल रिज़्क़ से भर दिया गया हो, रोज़े की अस्ल रूह़ यह है की बुराइयों के असबाब कमज़ोर पड़ जाएं यह रूह़ उसी वक़्त ह़ासिल हो सकती है जब ग़िज़ा में कमी की जाए जो शख़्स अपने सीने और दिल के दरमियान ग़िज़ा की आड़ बना लेगा तो वह मल्कूत के इन्किशाफ़ से मह़रूम रहेगा और मेअ़दा को ख़ाली रखने के साथ यह भी ज़रूरी है कि दिल ग़ैरूल्लाह से ख़ाली रहे और फ़िक्र अल्लाह के ए़लावा किसी चीज़ से न रहे कि अस्ल चीज़ यही है इफ़्तार के बाद दिलमें उम्मीद और ख़ौफ़ के मिले जुले ख़्यालात हों इसलिए कि रोज़ादार नहीं जानता कि उसका रोज़ा

मक़बूल है या नहीं हर इबादत से फ़राग़त के बाद यही तस़व्वुर होना चाहिए अल्लाह हम सबको रोजोंके आदाब और बरकातसे मालामाल फ़रमाए आमीन

हज़रते आइशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह ﷺ आप बताएं कि अगर मुझे लैलतुल क़दर का पता चल जाए तो मैं कौन सी दुआ माँगूं आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि तू यह दुआ माँग "अल्लाहुम्म इन्न क अ़फ़ूवुन तुहिब्बुल अ़फ़्व फ़अ़फ़ु अ़न्नी" (ऐ हमारे अल्लाह बे शक तू ही मुआ़फ़ करने वाला है और मुआ़फ़ी को पसन्द फ़रमाता है तो तू मुझे भी मुआ़फ़ फ़रमा दे)

हज़रते अनस रदियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि रमज़ानुल मुबारक की आमद पर रसूलेपाक ﷺ ने फ़रमाया यह जो महीना तुम पर आया है इसमें एक ऐसी रात है जो हज़ार माह से अफ़ज़ल है जो शख़्स इस रात से महरूम रहगया वह गोया सारे ख़ैर से महरूम रहा

और इस रात की भलाई से वही शख़्स महरूम रह सकता है जो वाक़ेअतन महरूम हो।

अहले मुकाशफ़ा ने फ़रमाया है कि शबे क़दर में सय्यिदुना जिब्रईल अलैहिस्सलाम फ़िरिशतों के झुरमुट में ज़मीन पर उतरते हैं और वह चार झन्डे गाड़ते हैं एक रौज़ए अतहर पर एक कअबा मुअज़्ज़मा के छत पर और एक बैतुल मुक़द्दस पर और एक आसमान और ज़मीन के दरमियान फिर वह फ़िरिशते तमाम तरफ़ों में फैल जाते हैं कोई ऐसा घर बाक़ी नहीं रहता जहाँ वह दाख़िल न हों जो शख़्स इबादत में मशगूल होता है फ़िरिशते उस को सलाम करते हैं और उन के लिए दुआए मग़फ़िरत करते हैं जो खड़े बैठे अल्लाह को याद कर रहा हो यह नक्शा तुलूए फ़ज्र तक बाक़ी रहता है। इस रात में नवाफ़िल पढ़ना कुरआने मजीद की तिलावत करना और तस्बीह व तहलील और इस्तिग़फ़ार पढ़ना चाहिए शबे क़दर में जितने नवाफ़िल अदा कर सके अदा करे।

सूफ़िया से मन्क़ूल नवाफ़िल व अज़्कार

चार रक्अ़त नफ़्ल नमाज़ इस त़रह़ पढ़े कि हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बाद सूरए तकासुर एक बार और सूरए इख़्लास़ तीन दफ़अ़ पढ़े तो मौत की सख़्तियों से आसानी होगी और अ़ज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ रहेगा।

दो रक्अ़त नफ़्ल नमाज़ इस त़रह़ पढ़े कि हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बाद सूरए इख़्लास़ 7/बार पढ़े सलाम के बाद 7/दफ़अ़ अस्तग़फ़िरूल्लाह कुल्ल जुनूबी या सत्तारु या ग़फ़्फ़ारु पढ़े तो वालिदैन की मग़फ़िरत हो जाएगी।

चार रक्अ़त नफ़्ल नमाज़ इस त़रह़ अदा करे कि हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बाद सूरए क़दर एक बार और सूरए इख़्लास 27/ बार पढ़े तो यह शख़्स गुनाहों

से ऐसा पाक हो जाएगा गोया आज ही माँ के पेट से पैदा हुवा उस को अल्लाह करीम जन्नत में हज़ार महल इनायत फ़रमाएगा।

दो रक्अ़त नफ़्ल नमाज़ इस त़रह़ पढ़े कि हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बाद सूरए क़दर एक बार और सूरए इख़्लास़ तीन बार पढ़े तो अल्लाह तआ़ला उसे शबे क़दर का सवाब अ़त़ा करेगा और उसे अम्बियाए केराम का फ़ैज़ मिलेगा उस की दुआ़ क़बूल होगी इन्शाअल्लाहु तआ़ला।

फ़ज़ाएले आयतुल कुर्सी अह़ादीस की रौशनी में

ह़दीसे पाक में है कि हुज़ूर सरवरे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि कुरआने पाक में सब से बड़ी आयत आयतुल कुर्सी है जो इसे पढ़ता है उस के लिए अल्लाह

तआ़ला एक फ़िरिशता मुक़र्रर फ़रमाता है जो इस के पढ़ने के वक़्त से ले कर दोसरे कल तक उस की नेकियाँ लिखता और बुराइयाँ मिटाता रहता है (तफ़्सीरे रूहुलब्यान जिल्द दोम स़फ़ा 32)

सय्यिदुना अ़लीयुल मुरतज़ा रदि़यल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि हुज़ूर सरवरे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि जिस घर में आयतुल कुर्सी पढ़ी जाती है तो तीस दिन तक उस घर के क़रीब भी शैत़ान नहीं भटकते और न ही उस घर में चालीस दिन तक जादूगर मर्द या औ़रत दाख़िल हो सकते हैं ऐ अ़ली (रदि़यल्लाहु अ़न्हु)ये आयत अपने बच्चों और अहलो अ़याल और पड़ोसियों को याद कराओ इस आयत से बढ़ कर और कोई आयत कुरआने मजीद में नाज़िल नहीं हुई, नीज़ आप ही से मरवी है कि आप ने फ़रमाया कि मैं ने नबी करीम ﷺ से सुना कि आप ने मिम्बर पर दौराने वअ़ज़ फ़रमाया जो शख़्स अपनी हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद आयतुल कुर्सी पढ़ता है

तो उसे बहिश्त से सिर्फ़ मौत रूकावट है और इस पर वही पबन्दी करता है जो सिद्दीक़ होगा या आबिद जो शख़्स इसे बिस्तर पर लेटते वक़्त पढ़ लेता है तो वह खुद और उसका पड़ोसी और उस के इलावा चन्द और घर अल्लाह तआला की अमान में आ जाते हैं(ऐज़न)

आयतुल कुर्सीः अऊज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

अल्लाहु लाइला ह इल्ला हुवल्हय्युलक़य्यूमु ला तअ खुजुहू सि नतूँ वला नौमुल्लहू माफ़िस्समावाति व मा फ़िल अरदि मन ज़ल्लज़ी यश फ़उ इन्दहू इल्ला बिइज़्निही यअ लमु मा बै न ऐदीहिम वमा ख़ल्फ़हुम वला युहीतू न बिशैइम्मिन इल्मिही इल्ला बिमा शा अ व सि अ कुर्सिय्युहुस्समावाति वल अर द वला यऊदुहू हिफ़्ज़ुहुमा व हुवल अलिय्युल अज़ीमु ।

हुज़ूर सय्यिदी मोह़युद्दीन रदि़यल्लाहु अ़न्हु की रूह़ानी तअ़लीमात व इजाज़त व ज़िक्रो फ़िक्रे आयतुल कुर्सी

अल्लाह तआ़ला की बे इन्तेहा ह़म्दो शुक्र है कि उसने अपने ह़बीब ﷺ और आप ﷺ की अहले बैत व अस्ह़ाब की रह़मतो शफ़्क़त से ये तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई कि वह मअ़मूल जो माहे शअ़बान के आख़िरी अ़शरे में इस नाचीज़ को सय्यिदी हुज़ूर ग़ौसुल अअ़ज़म रदि़यल्लाहु अ़न्हु के रूह़ानी फ़ैज़ान से अ़ता हुवा था जिस के फ़ुयूज़ो बरकात इस क़दर हैं जिन्हें अक़्लें एह़ाता नहीं कर सकतीं उसे उम्मते मोह़म्मदीया ﷺ को फ़ैज़याब करने के लिए आप की इजाज़त से हर ख़ास़ो आ़म के लिए इस साल ज़ाहिर किया जा रहा है इसे मअ़मूल में रखने वाला लैलतुल क़दर से मुलाक़ात करेगा और उस का

कामिल फ़ैज़ पाएगा इन्शा अल्लाहु तआ़ला ।

''रूहानी ज़िक्रो फ़िक्रे आयतुल कुर्सी'' इस्मे अअ़ज़म ''अल्लाह'' और आयते सुलत़ान ''आयतुल कुर्सी पर मुशतमिल है इस लिए इस को अ़मल में रखने वाला शैत़ान मरदूद और उस के तमाम लशकरियों के शरों से हमेशओ हमेश के लिए महफ़ूज़ रहेगा।

यह ''रूहानी ज़िक्रो फ़िक्रे आयतुल कुर्सी'' ह़क़ाइक़ो मआ़रिफ़ के अबवाब के खोलने की कुन्जी है, जिस में ''अला इन्न औलिया अल्लाहि ला ख़ौफ़ुन अ़लैहिम व लाहुम यह़ ज़नून'' का कामिल फ़ैज़ मौजूद है यह ग़ैबी ख़ज़ानए इलाहिया में से एक अ़ज़ीम ख़ज़ानए बे बहा है जिस को मअ़मूल में रखने वाला यक़ीनी त़ौर पर लैलतुल क़दर से शर्फ़याब होगा उस के ज़ाहिरो बात़िन में लैलतुल क़दर का फ़ैज़ शामिल हो जाएगा इस ज़िक्र की बरकत से ना अहल, अहल और आ़म,ख़ास़ नीज़ ख़ास़, अख़स्सुलख़्वास़ के ज़ुम्रे में शामिल हो जाएगा

उस का क़ल्ब मआ़रिफ़े इलाहिया व ख़ज़ाइने रब्बानिया के अनवार से पुर हो कर तजल्लियाते इलाहिया का मख़्ज़न बन जाएगा और नफ़्से ख़न्नास के शरों व दीगर हादसा व हलाकत और तमाम मुहलिक अमराज़े ज़ाहिरी व बातिनी से महफ़ूज़ हो जाएगा।

जिस तरह शैतान मरदूद और उस के लशकरी माहे रमज़ान में क़ैद रहते हैं इसी तरह अगर कोई रमज़ान के बाद भी रोज़ाना इस ज़िक्र को बर क़रार रखेगा तो अल्लाह तआ़ला उस को शैतान मरदूद के हमलों से बादे माहे रमज़ान भी महफ़ूज़ रखेगा और वह हमेशा शैतान मरदूद पर ग़ालिब रहेगा और उसे अब्दाल हज़रात व ख़्वाजा ख़िज़्र अलैहिस्सलाम और रिजालुलग़ैब हज़रात से मुलाक़ात होगी और शहर के अहलुल्लाह से मरातिब के लिहाज़ से मुलाक़ात होगी और वह क़ल्ब की कैफ़ियत के एअ़तिबार से उन से मुस्तफ़ीज़ होगा और वह मुस्तजाबुद्दअ़वात होगा और उस की जुम्ला हाजाते

दुन्यवी व उख़्रवी पुरी होंगी इस ज़िक्र को मअ़मूल में रखने वाले को अल्लाह की जुम्ला नेअ़मतों का फ़ैज़ मिलेगा उस का मुर्दा क़ल्ब ज़िन्दा हो कर क़य्यूमी सिफ़ात का ह़ामिल होगा उस से हर ग़फ़लतो काहिली व सुस्ती और जहालत की तारीकी दूर होजाएगी, तमाम मख़्लूक़ उस से मानूस होगी और सब पर उसे ग़लबा ह़ासिल होगा उस के अफ़्आलो अक़्वाल में कुन फ़ यकून का फ़ैज़ शामिल होगा वह नफ़्सानी ख़्वाहिशात और शैत़ानी वसाविस और बुरे अफ़्आलो किरदार से नजात पा जाएगा उसे अख़्लाक़े ह़स्ना की सल्त़नत ह़ासिल होगी और उस के घर से जुम्ला अस्राते ख़बीसा ख़तम होजाएंगे, अगर सेह़र ज़दह व दीगर अम्राज़ में मुब्तला लोगों को पानी पर दम कर के दे तो फ़ौरन शिफ़ा मिलेगी इस के आ़मिल के दरमियान और शौत़ान मरदूद के दरमियान फ़ासेला होजाएगा जुम्ला मख़्लूक़ात उस से मुस्तफ़ीज़ होगी और उन्हें उस की ज़ात से अम्नो अमान

हासिल होगा वह दुनया व आख़िरत की तमाम नेअ़मतों से मालामाल होगा उस से मोहताजी दूर होगी वह सिर्फ़ अल्लाह का मोहताज रहेगा उसे मज्लिसे मोहम्मदी ﷺ में शामिल कर लिया जाएगा उस पर रूहानियत का इस क़दर ग़ल्बा होगा कि हुजूर ग़ौसुल अअ़ज़म रदियल्लाहु अन्हु की ख़ास तौर से रहनुमाई और दस्तगीरी हासिल होगी उस के नज़दीक ज़ाहिरो बातिन और दूरो नज़दीक सब यकसाँ होंगे वह इल्मे लदुन्नी के कमालात से नवाज़ा जाएगा।

तालिबाने उलूमेनब्बीया इस मअ़मूल को ज़रूर ज़रूर अपनी ज़िन्दगी का हिस्सा बनाएं ताकि उन्हें उलूमेदीनिया के हुसूल में निहायत आसानी पैदा हो और वह नफ़्सो शौतान मरदूद के तमाम हरबों और चालों से महफ़ूज़ होजाएं और वह अ़क़्ल की तमाम आफ़तों से महफ़ूज़ हो कर ज़माने के हर फ़ितने से अमान में रहें और अल्लाह ग़ैब से उनकी इमदाद फ़रमाएगा और

ख़ुलूसो लिल्लाहियत के साथ अ़मल करने की तौफ़ीक़ मिलेगी ग़रज़ कि इस के फ़ुयूज़ो बरकात किसी ज़बानो क़लम में नहीं आ सकते बस इतना कहना काफ़ी है कि इस को मअ़मूल में रखने वाले को ऐसी ऐसी नेअ़मतों से नवाज़ा जाएगा जिसे न तो किसी कान ने सुना होगा और न किसी आँख ने देखा होगा और न किसी के दिल में उस का ख़्याल गुज़रा होगा जिसे अ़मल में रखने वाला ख़ुद मुशाहदा करेगा इन्शा अल्लाहु तआ़ला।

तरीक़ा रूहानी ज़िक्रो फ़िक्रे आयतुल कुर्सी

तहारते कामिला के साथ यक्सू हो कर हुज़ूरे क़ल्ब और लिल्लाहियत के साथ 11/बार यह दुरूद शरीफ़ पढ़े "अल्लाहुम्म या नूरु सल्लि अ़ला सय्यिदिना व मौलाना नूरि क मुहम्मदिवँ व इ़त्रतिही व बारिक व सल्लिम बि अ़ददि कुल्लि मअ़लूमिल्ल क ।

फिर सूरऐ फ़ातिहा 1/बार आयतुल कुर्सी 1/बार और सूरए इख़्लास 11/बार फिर मज़्कूरह दुरूद शरीफ़ 11/बार पढ़ कर अल्लाह के रसूल ﷺ और आप ﷺ की अहले बैत व सहाबए केराम व ताबेईन व तबए ताबेईन व जुम्ला औलियाए केराम बिल्ख़ुसूस सय्यिदी हुज़ूर ग़ौसुल अअ़ज़म रदियल्लाहु अन्हु की बारगाहे नूर में नज़्र करे और नज़्र करने के बाद इन कलेमात को एक एक बार कहे "रूहे रूहानी रूहे रब्बानी मुहयुद्दीन शैख़ अ़ब्दुल क़ादिरि अल जीलानीयु या रूही या क़ल्बी या नूरु या ग़ौसुल अअ़ज़मु यां बाज़े अशहब या मुहयद्दीनि या हज़रत शैख़ अ़ब्दल क़ादिरि अलजीलानीयु अग़िस्नी व अम्दिदनी व नव्विरनी वस्क़िनी व अअ़तिनी वर्हमनी व अक्रिम्नी वन्सुरनी वन्जुरनी वहफ़्ज़नी व अरशिदनी" इस के बाद या हज़रत शैख़ अ़ब्दल क़ादिरि अलजीलानीयु शैअल्लिल्लाहि 111/बार पढ़े इस के बाद मज़्कूरह दुरूद शरीफ़ 11/बार पढ़ कर

अऊ़ज़ुबिल्लाहि मिनश्शैत़ानिर्रजीम

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम।पढ़े फिर 11/बार आयतुल कुर्सी पढ़े उस के बाद **बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम, इअ़ तसम्तु बिल्लाहि ला कुव्व त इल्ला बिल्लाहि।** पढ़ कर इस्मे अल्लाह देखते हुए हर जगह ज़बान को तालू से लगा कर मुँह बन्द कर के ख़्यालो दिल से 100/बार अल्लाह اَللّٰہُ कहे। उसे क बाद

अल्लाहु लाइला ह इल्ला हू पढ़े

फिर100/बार उसी त़रह़ अल्लाह اَللّٰہُ कहे। उस के बाद

अल्ह़य्युलक़य्यूमु

फिर 100/बार अल्लाह اَللّٰہُ कहे। उस के बाद

ला तअ खुज़ुहू सि नतूँ वला नौम

फिर 100/बार अल्लाह اَللّٰہُ कहे। उस के बाद

लहू माफ़िस्समावाति व मा फिल अ़रदि

फिर 100/बार अल्लाह اَللّٰہُ कहे। उस के बाद

मन ज़ल्लज़ी यश फ़उ़ इन्दहू इल्ला बिइज़्निही

फिर 100/बार अल्लाह اَللّٰہُ कहे। उस के बाद

यअ़ लमु मा बै न ऐदीहिम वमा ख़ल्फ़हुम

फिर 100/बार अल्लाह اَللّٰہُ कहे। उस के बाद

वला युहीतू न बिशैइम्मिन इ़ल्मिही इल्ला बिमा शा अ

फिर 100/बार अल्लाह اَللّٰہُ कहे। उस के बाद

व सि अ़ कुर्सिय्युहुस्समावाति वल अर द़ वला यऊदुहू हिफ़्ज़ुहुमा व हुवल अ़लिय्युल अ़ज़ीमु

फिर 100/बार अल्लाह اَللّٰہُ कहे। उस के बाद

अल्लाहु ह़य्यी ला शरी क लहू पढ़े

फिर 100/बार अल्लाह اَللّٰہُ कहे। उस के बाद

अल्लाहु क़य्यूमी ला शरी क लहू पढे

फिर 100/बार अल्लाह اَللّٰہُ कहे। उस के बाद

अल्लाहु बाक़िन ला शरी क लहू

पढ़े फिर 100/बार अल्लाह اَللّٰہُ कहे।

उस के बाद 11/बार मज़्कूरह दुरूद शरीफ़ पढ़ कर अपनी ह़ाजत बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ करे।

नोटः वाज़ेह़ हो कि इस मअ़मूल को माहे रमज़ान के अव्वल दिन से आख़िरी रमज़ान तक मज़्कूरह त़रीक़े पर बर क़रार रखे और ज़िक्र करते वक़्त जब पहली बार 100/मरतबा अल्लाह का ज़िक्र करे तो इस्मे अल्लाह اَللّٰہ पर अपनी निगाह जमाले और मुँह बन्द करके ज़बान को तालू से लगा कर ख़्यालो दिल से अल्लाह अल्लाह 100/बार कहे उस के बाद आयतुल कुर्सी की आयत को ध्यान से तिलावत करते हुए जब दोसरी बार 100/बार इस्मे (नामे)अल्लाह اَللّٰہ का ज़िक्र करे तो उस पर भी पहले की त़रह़ अपनी निगाह जमाए रखे और ख़्यालो दिल से अल्लाह अल्लाह 100/बार कहे इसी त़रह़ ध्यान से तिलावत करते हुए बारहों (12)जगहों पर मज़्कूर इस्मे पाक अल्लाह اَللّٰہ पर नज़र जमाए और ख़्यालो दिल से अल्लाह अल्लाह कहे ।

माहे रमज़ान के बाद 1/ बार सूरए फ़ातिह़ा और 3/बार आयतुल कुर्सी अव्वलो आख़िर मज़्कूरह दुरूद

शरीफ़ को 11/11/बार पढ़ कर मज़्कूरह मअ़मूल को शुरूअ़ करे और उन बारहों (12) इस्मे पाक अल्लाह का ज़िक्र जहाँ 100/100/बार करना था वहाँ अब ख़्यालो दिल से सिर्फ़ 11/11/बार इस्मे पाक अल्लाह का ज़िक्र तिलावत के साथ मुकम्मल करे और इस मअ़मूल को हमेशा बर क़रार रखे और कभी तरक न करे जब भी वक़्त मिले इस मअ़मूल को पुरा करले।

अगर कोई शख़्स ब वज्हे मज्बूरी माहे रमज़ान में शुरूअ़ न कर सके तो किसी भी क़म्री (चाँद वाले) महीने की पहली तारीख़ से शुरूअ़ कर के उसी महीने में इस अ़मल को पुरा करे फिर दोसरे क़म्री महीने की पहली तारीख़ से माहे रमज़ान के बाद वाले मज़्कूर मअ़मूल को अ़मल में लाऐ।

रोज़ाना ज़िक्र से फ़ारिग़ होने के बाद अल्लाह तआ़ला की बारगाह में तौबा व इस्तिग़फ़ार करे और दुआ़ करे ऐ मेरे अल्लाह तू मुझे इन अस्मा व आयात

और ज़िक्रो फ़िक्र की बरकत से हर गुनाह और तमाम शैत़ानी फ़ेअ़लों से बचा ले और मुझे अपनी और अपने ह़बीब ﷺ की फ़रमाँ बरदारी में शराबोर फ़रमा।

बारगाहे रब्बुल आ़लमीन में दुआ़ है कि मौला तआ़ला अपने ह़बीब ﷺ व अहले बैते केराम व स़ह़ाबए केराम और सय्यिदी हुज़ूर ग़ौसुल अअ़ज़म व हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ व सय्यिद अह़मद ख़्वाजा कड़क शाह अबदाल और ह़ज़राते मख़्दूमीन सादाते चौदहों पीराँ रदियल्लाहु अ़न्हुम के वसीले से हम लोगों को अरकाने इस्लाम को स़ह़ीह़ त़ौर से अदा करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और जुम्ला मोमिनीन व मोमिनात और मुस्लिमीन व मुस्लिमात को माहे रमज़ान के आदाब की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और उस के फ़ुयूज़ो बरकात और अनवार में श़राबोर फ़रमाए और हम सब की मग़फ़िरत फ़रमाए।

آمِیْن بِجَاہِ سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَصَلَّی اللّٰہُ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ وَصَحْبِہٖ وَاَوْلِیَاءِ اُمَّتِہٖ اَجْمَعِیْنَ۔

آستانہ حضرات مخدومین سادات چودھوں پیراں (علیہم الرحمۃ والرضوان) الہ آباد

www.syed14peer.com